ISSN : 2320-0391

सृजन ಸೃಜನ

हिन्दी-कन्नड साहित्य और संस्कृति

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

त्रैमासिक पत्रिका

जनवरी-मार्च २०१६

साहित्य और संस्कृति

सृजन

हिन्दी–कन्नड त्रैमासिक

वर्ष -4
अंक - 14

सहयागि रोश

पाँच वर्ष - रु. 1500/-
आजीवन - रु. 3000/-

सारे चेक /ड्राफ्ट/मनिऑर्डर, सौम्य प्रकाशन
विजयपुर, के नाम से भेजें ।

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान
महाविद्यालय, विजयपुर

सह संपादक
प्रो. एस. जे. जहागीरदार
हिंदी विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, विजयपुर

संपादक मंडल
हिंदी

डॉ. एस. जे. पवार
हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान
महाविद्यालय, विजयपुर

डॉ. एस. एस. तेरदाल
हिंदी विभाग, जे.एस.एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, गोकाक

कन्नड

प्रो. बी. बी. डेंगनवर
कन्नड विभाग, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी
जि : विजयपुर

डॉ. आर. वी. पाटील
कन्नड विभाग, अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, विजयपुर

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय
सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जलि के सामने, विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)
दूरभाप : 9448185705, 9036505655
Email : srijantraimasik@gmail.com

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
कागदगपिर गल्ली गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com

अनुक्रम

लेख

1. व्यंग्य और श्रीलाल शुक्ल • गुर्रमकोंडा नीरजा 1
2. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का स्वरूप तथा संभावनाएँ • नामदेव एम. गौडा 3
3. प्रेमचंद तथा बसवराज कट्टीमनी जी का जीवन दर्शन • डॉ. युवराज य. जानकर 6
4. 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में अभिव्यक्त युवाचेतना • डॉ. चन्द्रशेखर आर. 9
5. हिंदी भाषा पर भूमंडलीकरण का प्रभाव • डॉ. एस. एस. तेरदाल 11
6. मुक्तिपर्व उपन्यास में दलित चेतना • डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड 15
7. मीडिया की भाषा हिंदी • लक्ष्मीनारायण गुप्ता 18
8. दलित साहित्य की वैचारिकता एवं दार्शनिकता • गीता गु. मठ 19

कहानी

9. माँ • नीरजा हेमेन्द्र 21

कविताएँ

10. पटरी पार करती स्त्री कट गयी • अरुणदेव 14

भाषांतर

11. पेपर वेट • अरुणदेव अनु : प्रो. साहेबहुसेन जहागीरदार 10
12. मनुष्य और प्राणी • जी. एस. शिवरुद्रप्पा अनु : डॉ. एस. टी. मेरवाडे 10

समीक्षा

13. अख्यान में बदलते 'क्षण' की कविताई • प्रो. राजमणि शर्मा 26

■■

मनुष्य और प्राणी

• मूल – जी. एस. शिवरूद्रप्पा
(कन्नड के प्रसिद्ध कवि)
अनु – एस. टी. मेरवाडे

आज कल मुझे एक-एक बार
लगता है, मनुष्य से भी प्राणी ही अच्छे हैं ।

कुत्ते
आगे खाकर
पीछे भौंकते नहीं
शेर
पेट भरने के बाद
अन्य की इच्छा नहीं करते
साँप
गुस्सा लाने तक
डँसते नहीं ।
गाय
किसी प्रतिष्ठा के लिए
भटकते नहीं ।
गधे
स्मरण कर
लात मारते नहीं ।

■■

RNI Regd. No. KARBIL/2014/54464

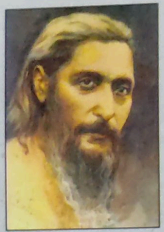

वर दे ! वीणा वादिनी वर दे !
प्रिय स्वतन्त्र-रव अमृत-मंत्र नव भारत में भर दे ।
काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर जगमग जग कर दे !
नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद-मंद, रव,
नव नभ के नव विहंग वृन्द को नव पर, नव स्वर दे !

– सूर्यकांन्त त्रिपाठी 'निराला'

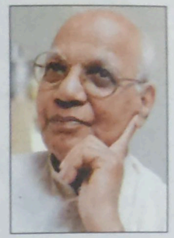

ಓ ತಾಯಿ ಸರಸ್ವತೀ
ನಿನ್ನ ವೀಣೆ ತಂತಿಗಳಲಿ
ಜೇಡ ಬಲೆಯ ನೂತಿದೆ
ನಿನ್ನ ಪಾದಪೀಠದ ಕಳ
ಗಿಲಿ ಹೆಗ್ಗಣ ಸೇರಿವೆ
ನಿನ್ನ ಕೈಯ ಪುಸ್ತಕವನು
ಗದ್ದಲರ್ಥ ತಿಂದಿದೆ
ನಿನ್ನ ಗುಡಿಯ ಗಂಟೆಗಳಿಗೆ
ತುಕ್ಕು ಹಿಡಿಯತೊಡಗಿದೆ
ಓ ತಾಯಿ ಸರಸ್ವತೀ
ಏನಿದೆಂಥ ದುರ್ಗತಿ !

– ಜಿ. ಎಸ್. ಶಿವರುದ್ರಪ್ಪ

ವರವ ಕೊಡು ! ಶಾರದೆ ವರವ ಕೊಡು
ಪ್ರಿಯ ಸ್ವತಂತ್ರ-ಧ್ವನಿ, ಅಮೃತ ಮಂತ್ರ
ನವ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಹರಡಿಸು
ಹೃದಯದಲ್ಲಿಯ ಅಂಧತ್ವ, ಬಂಧನ ತಗೆದುಹಾಕು
ಹರಿಸು ಜನನಿ, ಜ್ಯೋತಿರ್ಮಯ ಪ್ರಪಾತ
ಮಲಿನ-ಭೇದ ಅಂಧಕಾರ ಕಳೆದು ಪ್ರಕಾಶ ತುಂಬು
ಥಳಥಳಿಸಲಿ ಜಗವೆಲ್ಲ
ಹೊಸ ಗತಿ, ಹೊಸ ಲಯ, ತಾಳ, ಛಂದ ಹೊಸ
ಹೊಸ ಕಂಠ, ಹೊಸ ಮೇಘ ಘಜನೆ, ಹೊಸ ಧ್ವನಿ
ಹೊಸ ನಭದ ಹೊಸ ಪಕ್ಷಿಗಳ ಸಮೂಹಕ್ಕೆ
ಹೊಸ ಗರಿ ಹೊಸ ಸ್ವರ ಕೊಡು.

– ಸೂರ್ಯಕಾಂತ ತ್ರಿಪಾಠಿ 'ನಿರಾಲಾ'

ओ माँ सरस्वती
तेरे वीणा के तारों में
मकडीने जाल बुना है
तेरे पद के नीचे
चूहे-घूँस घुस गये हैं
तेरे हाथ के पुस्तक को
दीमक लगे
तेरे मंदिर के घंटियों को
जंग लग रहा है
ओ माँ सरस्वती
यह कैसी दुर्गति

– जी. एस. शिवरुद्रप्पा

ISSN 2320-0391

सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज' महाबलेश्वर कॉलनी, दर्गा जेल के सामने,
विजयपुर - 586103 (कर्नाटक)

ಸೌಮ್ಯ ಪ್ರಕಾಶನ
'ಕಬೀರ ಕುಂಜ' ಮಹಾಬಳೇಶ್ವರ ಕಾಲೋನಿ, ದರ್ಗಾ ಜೇಲ ಮುಂದೆ,
ವಿಜಯಪುರ – ೫೮೬೧೦೩ (ಕರ್ನಾಟಕ)